ई-वेस्ट के खतरों से जागरूकता

आज कल हर घर में लगभग हर चौथा सामान इलेक्ट्रॉनिक उपकरण की श्रेणी में आता है। बिजली से चलनेवाली इलेक्ट्रॉनिक चीजें जब बहुत पुरानी या खराब हो जाती हैं और उन्हें बेकार समझकर फेंक दिया जाता है तो उन्हें ई-वेस्ट (ई-कचरा) कहा जाता है। घर और ऑफिस में डेटा प्रोसेसिंग, टेलिकम्युनिकेशन, कूलिंग या एंटरटेनमेंट के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले आइटम इस श्रेणी में आते हैं, जैसे कि कंप्यूटर, एसी, फ्रिज, सीडी, मोबाइल, टीवी, ओवन, बैटरी आदि। हमारा उद्द्देश्य इस आर्टिकल से लोगो में ई-वेस्ट के बारे में जागरूकता फैलाना है। ई-वेस्ट से निकलने वाले जहरीले तत्व और गैसें मिट्टी व पानी में मिलकर उन्हें बंजर और जहरीला बना देते हैं। फसलों और पानी के जरिए ये तत्व हमारे शरीर में पहुंचकर बीमारियों को जन्म देते हैं। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) ने कुछ साल पहले जब सर्किट बोर्ड जलाने वाले इलाके के आसपास शोध कराया तो पूरे इलाके में बड़ी तादाद में जहरीले तत्व मिले थे, जिनसे वहां काम करने वाले लोगों को कैंसर होने की आशंका जताई गई, जबकि आसपास के लोग भी फसलों के जरिए इससे प्रभावित हो रहे थे।

घरों और यहां तक कि बड़ी कंपनियों से निकलने वाला ई-वेस्ट ज्यादातर कबाड़ी उठाते हैं। वे इसे या तो किसी गड्ढे में डाल देते हैं या किसी जलाशय में, या फिर कीमती मेटल जैसे कॉपर, सिल्वर आदि निकालने के लिए इसे जला देते हैं, या एसिड में उबालते है, और एसिड का बचा पानी या तो मिट्टी में डाल देते है या फिर खुले में फेंक देते है, ये सभी की सेहत के लिए काफी नुकसानदेह है ।

कुछ खतरनाक रासायनिक तत्व जैसे पारा, क्रोमियम, कैडमियम, सीसा, सिलिकॉन, निकेल, जिंक, मैंगनीज़, कॉपर, आदि भूजल पर भी असर डालते हैं । जिन इलाकों में अवैध रूप से रीसाइक्लिंग का काम होता है वंहा इलाकों का पानी पीने लायक नहीं रह जाता। असल समस्या ई-

वेस्ट की रीसाइक्लिंग और उसे सही तरीके से नष्ट (डिस्पोज) करने की है। हमारे यहाँ कुल ई-वेस्ट का 99 फीसदी हिस्सा न तो सही तरीके से इकट्ठा किया जा रहा है, न ही उसकी रीसाइकलिंग नियमानुसार की जाती है। आमतौर पर सामान्य कूड़े-कचरे के साथ ही इसे जमा किया जाता है और अक्सर उसके साथ ही डंप भी कर दिया जाता है। ऐसे में इनसे निकलने वाले रेडियोऐक्टिव और दूसरे हानिकारक तत्व अंडरग्राउंड वॉटर और जमीन को प्रदूषित कर रहे हैं।

ई-वेस्ट का निपटारा करने का सबसे अच्छा मंत्र रिड्यूस (कम उपयोग), रीयूज (वापस उपयोग) और रीसाइकलिंग (ठीक कराके वापस उपयोग) का है। यानी इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण को संभालकर और किफायत से इस्तेमाल करें, पुराने चालू आइटम को जरूरतमंद को दे दें या बेच दें और जिन चीजों को ठीक न कराया जा सके, उन्हें सही ढंग से रीसाइकल कराएं।

ई-वेस्ट को कबाड़ी को देने की वजाय उसे लाइसेंस धारी रजिस्टर्ड केन्द्रो पर जमा करना चाहिए जिनकी जानकारी म. प्र. पोल्युशन सेंट्रल बोर्ड की साइट http://www.mppcb.nic.in/ पर उपलब्ध है। ई-वेस्ट को कलेक्ट करने की जिम्मेदारी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाली कम्पनियो की भी है, अतः नया उपकरण खरीदते समय पुराना उपकरण उन्हें दे देना उचित रहता है|

प्रो. रुपेश दुबे
विभागाध्यक्ष,
इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट,
आई. पी. एस. एकेडमी,
इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर